अन्धकासुरकृत शिवाष्टोत्तरशतनाम – स्तोत्र[1]

भगवान् शिव ने युद्ध में अन्धकासुर को त्रिशूल भोंककर उसे स्थाणु के समान ऊपर को उठा लिया। उसका जर्जर शरीर नीचे को लटक रहा था। सूर्य की किरणों ने उसे सुखा दिया। पवन के झोंकों से युक्त मेघों ने मूसलाधार जल की वर्षा कर उसे गीला कर दिया। हिमखण्ड के समान शीतल चन्द्रमा की किरणों ने उसे विशीर्ण कर दिया। फिर भी उस दैत्यराज ने अपने प्राणों का परित्याग नहीं किया। वह उस समय भगवान् शिव का निम्न 108 नामों द्वारा स्तवन कर रहा था।

महादेवं विरूपाक्षं चन्द्रार्धकृतशेखरम् । अमृतं शाश्वतं स्थाणुं नीलकण्ठं पिनाकिनम्।।
वृषभाक्षं महाज्ञेयं पुरुषं सर्वकामदम् । कामारिं कामदहनं कामरूपं कपर्दिनम्।।
विरूपं गिरिशं भीमं सृक्किणं रक्तवाससम् । योगिनं कालदहनं त्रिपुरघ्नं कपालिनम्।।
गूढव्रतं गुप्तमन्त्रं गम्भीरं भावगोचरम् । अणिमादिगुणाधारं त्रिलोकैश्वर्यदायकम्।।
वीरं वीरहणं घोरं विरूपं मांसलं पटुम् । महामांसादमुन्मत्तं भैरवं वै महेश्वरम्।।
त्रैलोक्यद्रावणं लुब्धं लुब्धकं यज्ञसूदनम्। कृत्तिकानां सुतैर्युक्तमुन्मत्तं कृत्तिवाससम्।।
गजकृत्तिपरीधानं क्षुब्धं भुजगभूषणम् । दत्तालम्बं च वेतालं घोरं शाकिनिपूजितम्।।
अघोरं घोरदैत्यघ्नं घोरघोषं वनस्पतिम् । भस्माङ्गं जटिलं शुद्धं भेरुण्डशतसेवितम्।।
भूतेश्वरं भूतनाथं पञ्चभूताश्रितं खगम् । क्रोधितं निष्ठुरं चण्डं चण्डीशं चण्डिकाप्रियम्।।
चण्डतुण्डं गरुत्मन्तं निस्त्रिंशं शवभोजनम् । लेलिहानं महारौद्रं मृत्युं मृत्योरगोचरम्।।
मृत्योर्मृत्युं महासेनं श्मशानारण्यवासिनम् । रागं विरागं रागान्धं वीतरागं शतार्चिषम्।।
सत्त्वं रजस्तमोधर्ममधर्मं वासवानुजम् । सत्यं त्वसत्यं सद्रूपमसद्रूपमहेतुकम्।।
अर्धनारीश्वरं भानुं भानुकोटिशतप्रभम् । यज्ञं यज्ञपतिं रुद्रमीशानं वरदं शिवम्।।

इति अन्धकासुरकृत शिवाष्टोत्तर शतनामस्तोत्रं

(शिवपुराण रु. सं. युद्धखण्ड 49/5 – 18)

इस स्तोत्र में भगवान् शिव के निम्न 108 नामों का उल्लेख है –

महादेव, विरूपाक्ष, चन्द्रार्धकृतशेखर, अमृत, शाश्वत, स्थाणु, नीलकण्ठ, पिनाकी, वृषभाक्ष, महाज्ञेय, पुरुष, सर्वकामद, कामारि, कामदहन, कामरूप, कपर्दी, विरूप, गिरिश, भीम, सृक्की, रक्तवासा, योगी, कालदहन, त्रिपुरघ्न, कपाली, गूढव्रत, गुप्तमन्त्र, गम्भीर, भावगोचर, अणिमादिगुणाधार, त्रिलोकैश्वर्यदायक, वीर, वीरहन्ता, घोर, विरूप, मांसल, पटु, महामांसाद, उन्मत्त, भैरव, महेश्वर, त्रैलोक्यद्रावण, लुब्ध, लुब्धक, यज्ञसूदन, कृत्तिकासुतयुक्त, उन्मत्त, कृत्तिवासा,

---

1. अन्धकासुर की कथा एवं स्तुति शिवपुराण के अतिरिक्त कूर्मपुराण (1/15/188 – 200), वामनपुराण (44/52 – 66) आदि अनेक ग्रन्थों में पायी जाती है।

गजकृत्तिपरीधान, क्षुब्ध, भुजगभूषण, दत्तालम्ब, वेताल, घोर, शाकिनीपूजित, अघोर, घोरदैत्यघ्न, घोरघोष, वनस्पति, भस्माङ्ग, जटिल, शुद्ध, भेरुण्डशतसेवित, भूतेश्वर, भूतनाथ, पञ्चभूताश्रित, खग, क्रोधित, निष्ठुर, चण्ड, चण्डीश, चण्डिकाप्रिय, चण्डतुण्ड, गरुत्मान्, निस्त्रिंश, शवभोजन, लेलिहान, महारौद्र, मृत्यु, मृत्योरगोचर, मृत्योर्मृत्यु, महासेन, श्मशानारण्यवासी, राग, विराग, रागान्ध, वीतराग, शतार्चि, सत्त्व, रजः, तमः, धर्म, अधर्म, वासवानुज, सत्य, असत्य, सद्रूप, असद्रूप, अहेतुक, अर्धनारीश्वर, भानु, भानुकोटिशतप्रभ, यज्ञ, यज्ञपति, रुद्र, ईशान, वरद, शिव।

यह अन्धकासुर-कृत शिवाष्टोत्तर शतनाम-स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।

उपर्युक्त स्तोत्र से करुणा के अगाध सागर शम्भु प्रसन्न हो गये और उन्होंने उसे प्रेमपूर्वक गणाध्यक्षपद प्रदान कर दिया।

इस स्तोत्र के पाठ से व्यक्ति संसारभय से मुक्त हो गणेश्वर के पद को प्राप्त करता है।

(उपर्युक्त स्तोत्र गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित संक्षिप्त शिवपुराण से लिया गया है।)

❀❀❀❀❀❀

ब्रह्मज्ञानी ही सर्वश्रेष्ठ

भूतों में प्राणधारी श्रेष्ठ हैं, उनमें भी बुद्धिजीवी, बुद्धिजीवियों में भी मनुष्य और मनुष्यों में भी ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं। ब्राह्मणों में विद्वान्, विद्वानों में पवित्र बुद्धिवाले पुरुष, उनमें भी कर्म करनेवाले व्यक्ति तथा उनमें भी ब्रह्मज्ञानी पुरुष सबसे श्रेष्ठ हैं। इस प्रकार ब्रह्मज्ञानी तीनों लोकों में सर्वश्रेष्ठ माने गये हैं, अतः सबके लिये परमपूज्य हैं। उनका संग महान् पातकों का नाश करनेवाला है।

भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः प्राणिनां मतिजीविनः।।
मतिमत्सु नराः श्रेष्ठा नरेषु ब्रह्मजातयः।
ब्राह्मणेषु च विद्वांसो विद्वत्सु कृतबुद्धयः।।
कृतबुद्धिषु कर्तारः कर्तृषु ब्रह्मवेदिनः।
अत एव सुपूज्यास्ते तस्माच्छ्रेष्ठा जगत्त्रये।।
तत्संगतिर्विशां श्रेष्ठ महापातकनाशिनी।

(पद्ममहापु. स्वर्गखण्ड 31/201-204)